International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493; Impact Factor: RJIF 5.46
Received: 10-09-2020; Accepted: 25-09-2020; Published: 11-10-2020
Volume 2; Issue 4; 2020; Page No. 09-11

त्यागपत्र: सामाजिक मंगलकांक्षाओं के लिए मृणाल का आत्मदहन

राजीव कुमार प्रसाद
हिंदी शोधार्थी, यु० जी० सी०- नेट, ल० ना० मि० वि०, दरभंगा, बिहार, भारत

सारांश
'त्यागपत्र' जैनेंद्रजी की अद्भुत कला का कौशल है, इसमें एकमात्र मृणाल के व्यकितत्व की कहानी है| उसके माता-पिता नहीं हैं| भाई का स्नेह उनके स्नेह की पूर्ति नहीं कर सका| वह जीवन भर भटकती हुई, घोर यंत्रणाए झेलती हुई अतृप्ति की ही आहुति बन जाती है| मृणाल द्वारा समाज के नैतिक मान्यतायों का खोखलापन तथा विरोधाभास उदघाटित किया गया है| दार्शनिक धरातल पर मृणाल भले ही प्रत्यक्ष रूप से असफल और पराजित ही क्यों न हुई है, पर आत्मा और हृदय के धरातल पर वह सफल और अपराजेय है| मृणाल एक आदर्श प्रस्तुत करती है जिसमे प्रेम और मानवीय करुना की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है| 'त्यागपत्र' के नायक प्रमोद का त्यागपत्र अपनी नौकरी से त्यागपत्र नहीं, बल्कि उस सामाजिक व्यवस्था से है जिसके थेपेरों में एक निरीह, सीधी-साधी बहन-बेटी तिल-तिलकर घुटते हुए अंत में समाज के ही एक नरक वेश्यालय में पहुँचकर रुग्णावस्था में अपना जीवन समाप्त करती है| प्रारंभ में शीला के भाई के साथ प्रेम सम्बन्ध, प्रमोद जो उसका भातीजा है- का उसकी ओर आकर्षित होना| मृणाल की शादी प्रौढ़ व्यक्ति से होना, पति द्वारा त्यागा जाना, कोयले वाले के साथ भागना, वेश्याओं के बीच रहना, उसके दु:ख दर्द की भीषण स्थिति है| त्यागपत्र का फलक अत्यंत विस्तृत है| मनोविश्लेषण द्वारा इस उपन्यास में मर्यादाओं को तोड़ा गया है और नये विचारों, नई मान्यताओं को जोड़ा गया है| जैनेन्द्र कुमार की लेखनी में नारी पात्रों के प्रति अपार सहानुभूति है| पाठक का हृदय 'त्यागपत्र' को पढ़ने के बाद करुणा से भर उठता है, जो कि जैनेन्द्र के चरित्र-चित्रण की विशेषता है|

मूल शब्द: विरोधाभास, सहानुभूति, मनोविश्लेषणात्मक, नियतिवादी, अन्तर्व्यथाओं, संत्रासदायक, आत्मपीड़न, यथार्थ, प्रताड़ित, चरित्रहीन, प्रत्यक्षदर्शी, अन्तर्दृष्टि, आक्रोश, तिरस्कार, आस्तिकता

प्रस्तावना

जैनेन्द्र कुमार हिन्दी साहित्य के लब्धप्रतिष्ठ उपन्यासकार हैं| प्रेमचन्द के लेखन काल के उत्तरार्ध मे जिन औपन्यासिक प्रवृत्तियों की नींव पड़ी, उनका पूरा विकास प्रेमचंद के बाद जैनेन्द्र के उपन्यासों में देखा जा सकता है| सुनीता की रचना के साथ ही वे हिंदी उपन्यास के नये निर्माता के रूप में प्रसिद्ध हो गये| 1937 में उनकी रचना 'त्यागपत्र' प्रकाशित हुई| 'त्यागपत्र' को असंदिग्ध रूप से जैनेन्द्र की सर्वोत्कृष्ट औपन्यासिक कृति माना जा सकता हैं| वे हिंदी-साहित्य के उपन्यासकारों में मनोवैज्ञानिक, मनोविश्लेषणात्मक औपन्यासिक धारा के प्रवर्तक माने जाते हैं| 'त्यागपत्र' दो विपरीत विचारधाराओं का सजीव चित्रण है| प्रमोद नियतिवादी, आस्थावादी और आदर्शवादी है| वह समाज द्वारा बनायीं गयी सभ्यता, संस्कृति और व्यवस्था मे विश्वास करनेवाला है| जीवन की ओर देखने तथा उसके मूल्यांकन के लिए उसके पास एक मापदंड है, जिसके सहारे वह दुनिया की हर चीज को परखता है| उसके जीवन में स्थिरता है| दूसरी विचारधारा मृणाल है, उसका निर्माण दूसरे उपकरणों द्वारा किया गया है तथा उसका विचार प्रमोद से बिल्कुल भिन्न है। वह समाज द्वारा बनायी गयी व्यवस्था की लीक से हटकर अपना पथ निर्माण करने में विश्वास करती है। वह आँखें बंद कर नहीं आँखें खोलकर देखती है। वह बीसवीं सदी की एक जागृत महिला है। इन दोनों के पारस्परिक मानसिक संघर्ष तथा उनके हृदय की अन्तर्व्यथाओं का सजीव चित्र ही 'त्यागपत्र' की आत्मा है|

उपन्यास का नायक प्रमोद है , जो अपनी बुआ के मरने की खबर सुनकर आहत है। उसकी बुआ (मृणाल) इस उपन्यास की नायिका है। उसकी मौत जिस परिस्थिति में हुई है वह समाज की दृष्टि में पाप का दायरा है परन्तु प्रमोद जज होकर भी उसे पाप की संज्ञा नहीं दे सका। इस प्रकार 'त्यागपत्र' एक भयावह, संत्रासदायक जीवन की दु:खांत कहानी है| कहानी का केंद्र मृणाल है, जिसकी चारित्रिक मूल चेतना है-

> "मैं समाज को तोड़ना - फोड़ना नहीं चाहती हूँ| समाज टूटा तो फिर हम किसके भीतर बनेंगे ? या कि किसके भीतर बिगड़ेंगे ? इसलिए, मैं इतना ही कर सकती हूँ कि समाज से अलग होकर उसकी मंगलकांक्षाओं में स्वयं ही टूटती रहूँ|"

जैनेन्द्र का मानना है कि "पीड़ा में ही परमात्मा बसता है। मेरे उपन्यास आत्मपीड़न के साधन हैं|" त्यागपत्र में भी उनकी यही दृष्टि रही है। प्रमोद के माध्यम से चिंता करता हुआ लेखक कहता है-

> "मानव चलता जाता है और बूंद - बूंद इकट्ठा होकर उसके भीतर भरता जाता है। वही सार है , वही जमा हुआ दर्द मानव की मानसमणि है, उसके प्रकाश में मानव का गतिपथ उज्ज्वल होगा|"

जैनेन्द्रजी ने छायावाद कालीन स्वप्निल अभिव्यक्ति की माध्यम नारी को सबसे पहले कथा क्षेत्र में उतारा है। 20 वीं शताब्दी में उभरते हुए नारी के व्यक्तित्व को

प्रतिस्थापित किया है। इनके उपन्यासों में नारी के स्वरूप में उसके अस्तित्व, व्यक्तित्व, शिक्षा, संस्कार , आचरण आदि पर फ्रायड, एडलर युंग जैसे मनोवैज्ञानिकों का प्रभाव है। जैनेन्द्र की नारी बाह्यजगत की सामजिक समस्याओं में ध्यान न देकर अपनी आन्तरिक व्यथा पर ध्यान देती है। वह नारी के लिए बने बनाये आदर्शों से आगे निकलकर निजी आदर्शों की खोज करती है।

'त्यागपत्र' की नायिका मृणाल के ईद-गिर्द उपन्यास का सम्पूर्ण कथानक घूमता रहता है, स्वयं अपने स्वतंत्र अधिकारों के लिए संघर्षरत है। वह विवाह, पतिव्रता धर्म आदि का नव -मूल्यांकन करती है। वह अपनी समस्याओं का समाधान यथार्थ परिस्थितियों में खोजती है। मृणाल का चरित्र दुःखवादी दर्शन के ताने - बाने से बुना गया है। जीवन के विभिन्न स्तरों पर आत्मपीड़न को नियति के रूप में स्वीकार कर वह समाज के निम्न से निम्नवर्ग की ओर बढ़ती चली जाती है।

बढ़ती वय के साथ सहपाठिनी शीला के भाई से उसका प्यार हो जाता इसका पता जब मृणाल की भाभी को चलता है तो वह प्रताड़ित करती है, बेंत से पीटती है। स्कूल जाना बन्द कर दिया जाता है और पाँच - छ : महीने बाद अधेड उम्र के एक विधुर से उसकी शादी कर दी जाती है। कालान्तर में पति को परमेश्वर समझने वाली मृणाल अपने प्रेम - प्रसंग की चर्चा पति से करती है, तो पति उसे चरित्रहीन समझकर शहर में ही एक अलग कोठरी में रख देता है। बाद में वह कोयला बेचनेवाले बनिया के साथ रहने लगती है, लेकिन वह बनिया मृणाल के रूप और यौवन पर मोहित हो उसकी असहाय स्थिति का लाभ उठाता है। मृणाल परिस्थिति से लाचार हो उसकी इच्छा का शिकार हो जाती है। प्रमोद, जो अपनी बुआ मृणाल के सभी क्रियाकलापों का प्रत्यक्षदर्शी है और अपनी बुआ को हृदय से प्यार करता है - वह मृणाल को इस स्थिति से उबारना चाहता है। मृणाल इसके लिए तैयार नहीं होती वह सामाजिक व्यवस्था पर प्रहार करते हुए कहती है-

"इस कोठरी में मैं न रहूँगी, कोई और रहेगा, ये कोठरियों तो आबाद ही रहेंगी।"

कुछ दिनों के बाद कोयला वाला बनिया भी उसे छोड़कर अपने घर लौट जाता है। परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए वह अंत में वेश्याओं के मुहल्ले में रहने लगती है। प्रमोद अपनी बुआ को खोजते हुए वहाँ भी पहुंच जाता है और उसे घर चलने की मिन्नतें करता है लेकिन वह इनकार कर देती है। ऊपर-ऊपर से पतनोन्मुख प्रतीत होनेवाली मृणाल के इस चरित्र में वैचारिकता के स्तर पर जीवन और समाज के प्रति क्रमशः परिपक्व होती जाती उसकी अन्तर्दृष्टि का परिचय भी मिलता है। उसका पतन घटनाओं की स्वाभाविक परिणति नहीं है, बल्कि ऐसा प्रतीत होता है जैसे वह खुद उसे आगे बढ़कर स्वीकार कर रही है।

जैनेन्द्र स्पर्धा (अहं) तथा समर्पण को मानव मन की दो मुख्य प्रवृत्तियों मानतेहैं| उनका मानना है कि अहं का कारण खण्डता की भावना है। इसके लिए समाज में सम्पूर्ण वृत्ति प्रधान चरित्रों की अपेक्षा है जो स्वयं टूटकर भी समाज को से बचा ले। मृणाल के चरित्र का विकास भी मुख्यतः इन्हीं दोनों प्रवृत्तियों की टकराहट के बीच हुआ है। समाज और व्यवस्था के प्रति उसके मन में आक्रोश है, लेकिन वह उसे नष्ट नहीं होने देना चाहती। इस द्वन्द् में जैनेन्द्र के अन्य नारी पात्रों की तरह मृणाल में भी आत्मपीड़न की प्रवृत्ति प्रबल हो उठती है। प्रमोद की माँ, पिता, शीला और उसका भाई, मृणाल का पति, कोयले वाला बनिया, डॉक्टर और उनकी पत्नी, पुत्री राजनन्दिनी सभी उसके आत्मपीड़न की स्थितियाँ उत्पन्न करते हैं। हालाँकि, मृणाल के आत्मपीड़न के लिए उन पात्रों को दोषी नहीं ठहराया जा सकता क्योंकि उनका आचरण समाज की प्रचलित मान्यताओं के अनुरूप है। मृणाल के अन्दर अहम् और समर्पण का द्वन्द्व शुरू से ही देखा जा सकता है। शादी के बाद पहली बार ससुराल से आने पर शीला के भाई के प्रति मृणाल का आकर्षण पुनर्जीवित हो उठता है और वह प्रमोद के हाथों एक पत्र शीला के भाई के पास भेजती है। वह जवाब भी देता है। हालाँकि पत्र पढ़ने के बाद मृणाल का पत्नीत्व बोध जाग जाता है और वह प्रमोद को आगे से कोई खत लाने से मना कर देती है। पति द्वारा तिरस्कृत होने के बाद वह शहर की एक कोठरी में ही पड़ी रहती है, लेकिन इस तिरस्कार के बावजूद उसके मान में पति के प्रति कोई विरोध भाव नहीं है| इस स्थल पर वह स्त्री धर्म को व्याख्यायित करते हुए कहती है-

"मैं स्त्री धर्म को पतिव्रत धर्म ही मानती हूँ| उसका स्वतंत्र धर्म मैं नहीं मानती| क्या पतिव्रता को यह चाहिए की पति नहीं चाहता, तब भी वह अपना भार उसपर डाले रहे ? वे मुझे देखना भी नहीं चाहते, यह जानकर मैंने उनकी आँखों के आगे से हट जाना स्वीकार कर लिया। तिरस्कार की इस स्थिति में उसके मन में आत्महत्या का विचार भी आता है परन्तु उसके अन्दर एक गहरी आस्तिकता है जो उसे ऐसा करने से रोक लेती है। वह सोचती है-

"लेकिन एकाएक मुझे पता लग गया कि जिसने जीवन दिया है, मौत भी उसी की दी हुई है। अपने अहंकारवश मरनेवाली मैं कौन होती हूँ? भूख से मरना पड़े तो मर भी जाऊँ, पर सोच-विचार कर अपराध कैसे कर सकती हूँ? "

कोयला वाला बनिया उसके रूप से आकर्षित होकर ही उसके निकट आया है और रूप का मोह भंग होने पर वह उसे छोड़कर निश्चित रूप से चला जायगा, वह इस बात को अच्छी तरह समझती है। बनिया से उसे गर्भ ठहर गया था और गर्भ के बच्चे के भविष्य को लेकर भी वह चिन्तित है लेकिन फिर भी वह बनिये के साथ रहती है और आखिरकार वह बनिया उसे पीटकर छोड़ देता है। बनिया से ठहरे गर्भ के प्रसव के लिए वह मिशन अस्पताल जाती है। वहाँ वह एक बच्ची को जन्म देती है। अस्पताल की बड़ी डॉक्टर ने अच्छे भविष्य के लिए ईसाई होने का प्रस्ताव किया परन्तु वह वर्तमान की अनिश्चितता और फटेहाली के बावजूद धर्म परिवर्तन नहीं करती। अन्तिम चरण में वह वेश्यालय पहुँच जाती है। जब प्रमोद उससे घर चलने का अनुरोध करता है, तो वह उसे ठुकरा देती है। उसके पीछे मृणाल का अपना तर्क है-

"कलई वाला सदाचार यहाँ नहीं चलता।" यहाँ आदमी सगर्व पशु बन सकता है।"

मृणाल की कही गयी इन पंक्तियों में वर्तमान सामाजिक व्यवस्था पर बहुल बड़ा व्यंग्य किया गया है। प्रमोद से वह सहायता चाहती है, पर उस सहायता का स्वरूप अलग है।

"सहायता मुझे इसलिए चाहिए कि मेरा मन पक्का होता रहे कि कोई कुचले तो भी मैं, न कुचली जाऊँ और इतनी जीवित रहूँ कि उसके पाप के बोझा का भी भार ले लूँ और सबके लिए क्षमा की प्रार्थना करूँ।"

मृणाल का द्वन्द्व यहाँ अत्यन्त स्पष्ट होकर सामने आया है। सब तरह के विरोधों के बीच वह अपने को बचाए रखना चाहती है, लेकिन बचना भी इसलिए चाहती है कि वह दूसरों के काम आ सके। सभी तरह के अत्याचार सहकर भी मृणाल समाज को तोड़ना नहीं चाहती, क्योंकि समाज के प्रति उसकी गहरी आस्था है। समाज रहेगा, तभी उसमें बदलाव लाया जा सकता है। व्यक्ति के बनने की सम्भावनाएँ जीवित रह सकती हैं। समाज के टूट जाने से ये सम्भावनाएँ भी समाप्त हो जाएंगी। इसी सोच के कारण समाज के कल्याण के लिए वह बार-बार खुद टूटती रहती है।

जैनेन्द्र के ही समकालीन अज्ञेय की रचनाओं में भी यही जीवन दर्शन परिलक्षित होता है। "नदी के द्वीप" में अज्ञेय ने भी यही कहना चाहा है।

जैनेन्द्र ने त्यागपत्र की मृणाल को टाइप न बनाकर व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। उसकी मान्यताएँ, उसके आचरण सामान्य नारियों से सर्वथा भिन्न हैं। अपने अन्य उपन्यासों के माध्यम से जैनेन्द्र कुमार ने पारम्परिक रीतियों, नीतियों मान्यताओं और व्यवहारों पर कई गम्भीर सवाल उठाए हैं, लेकिन इन प्रश्नों की कोई उत्तर उपन्यासकार के पास नहीं है। जैनेन्द्र ने लिखा है- "मेरे सभी पात्र बेचारे हैं जो हैं सो हैं। मृणाल से सम्बन्धित प्रश्नों का भी जैनेन्द्र के पास यही उत्तर है, क्योंकि यह प्रमोद के कागजों से प्राप्त कहानी है।

'त्यागपत्र' जैनेन्द्र की औपन्यासिक कृतियों में सर्वोकृष्ट है| जितनी प्रशस्ति और आक्षेपों का केंद्र इस उपन्यास को बनना पड़ा है, उस दृष्टि से इनती विवादग्रस्त समीक्षा शायद ही हिन्दी औपन्यासिक क्षेत्र में अन्य कृति की हुई हो| एक ओर डॉ० नगेन्द्र प्रभृति विद्वानों ने जहाँ 'त्यागपत्र' को सर्वोत्कृष्ट उपन्यास की कोटि में स्थान दिया है, वहीं दूसरी ओर नन्ददुलारे वाजपेयी आदि समीक्षकों ने समाज के हित के तराजू पर 'त्यागपत्र' को तोलकर इसके महत्त्व को संदिग्ध बना दिया है|

निष्कर्ष

इस उपन्यास में मृणाल के चरित्र को शुरू से अंत तक जैनेन्द्रजी ने एक मुक्त चेतनामयी स्त्री के रूप में उपस्थित किया है| त्यागपत्र की मृणाल नारी विषयक परंपरागत संहिता की जंजीरों से बंधी स्त्री का पूरी तरह से प्रतिनिधित्व करती है। यह नारी संहिता न स्त्री को प्रेम करने की इजाजत देता है, न स्वतंत्र रूप से जीने की। मृणाल इसी संहिता का उल्लंघन करती है और समाज उसे परंपरागत रूप से दण्डित करता है। यहीं से मृणाल का मार्ग अपने समय की नारी से भिन्न हो जाता है, वह अपने स्वभाव और संवेदना से सामान्य स्त्री से भिन्न है। यह भिन्नता ही पक्की नींव वाली व्यवस्था से उसके संघर्ष और त्रासदी का कारण बनता है। वह सामाजिक व्यवस्था का विरोध आत्मदहन द्वारा करती है, जो शास्त्र में नहीं मिलता, यह ज्ञान आत्मव्यथा से मिल जाता है।

संदर्भ सूची

1. उपनिवेश में स्त्री – प्रभा खेतान
2. औरत होने की सजा – अरविन्द जैन
3. पराधी पर स्त्री – मृणाल पाण्डेय
4. नदी के द्वीप – अज्ञेय
5. खुली खिड़कियाँ – मैत्रेयी पुष्पा